

मानवीय राजीव प्रोडोग्निकी संस्थान अन्धपुर के चरितारजनों
के समिन्द्र आग्रह पर दिनांक 22 अक्टूबर, 2009 को संस्थान
परिसर में मुनिश्री विनायकज्ञान जी 'अगलोक' का सुआगमन हुआ
कार्यक्रम का मञ्चरव उद्घाटन विद्यार्थियों, शिक्षकों व अधिकारियों
को अध्यात्म, धर्म-निर्भाव, धर्मित्व विकास का समाज व
राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्वों से सुनिश्ची हारा
बोध प्राप्त करना था। कार्यक्रम का शुभारम्भ लेखांच्छ झीला
मंडल की स्वर्णसेविकाओं हारा मंगलाचरण कर किया गया।
संस्थान के निदेशक प्रो. राजपाल विहिया ने सुनिश्ची का
मानसिक अभिनन्दन किया और विश्वास व्यक्त किया कि
उनका भागदीशन व आत्मविचरण अपने भी संस्थान को निम्नार
मिलता रहेगा।

धर्मित्व विकास विषय पर एकान्त प्रस्तुति में सुनिश्ची ने
शारीरिक व बौद्धिक विकास के साथ-साथ नैतिक मूलभूतों की
पुनर्स्थापना व मनुष्य के धर्मित्व विकास पर मुख्य वत्त दिया।
उपर्युक्त शिक्षकों से नव लोग हुए उन्होंने ऐसे राष्ट्र और
सरकार हारा शिक्षक समुदाय के लिये धोखित नहीं बोलनालों
पर रुक्षी व्यक्ति की वही 'दूसरी' और उनको 'शिक्षकों'
के दायित्व व उनकी विद्यार्थी निर्भाव में नहीं भूमिका" का
भी बोध कराया। उन्होंने कहा कि "मिलना आप लोग हैं—
उसी अनुपात में व कही 'उससे भी अधिक आपको देना
है'" देने से उनका अभिप्रायः दात्र-दात्राओं जो शिक्षित
व प्रशिक्षित करने के साथ राष्ट्र के धर्म-निर्भाव में
सुवा धीर्घी को लेपार करने से था। सुनिश्ची के व्यतीय
का विद्यार्थियों में हर्ष हवान से स्वागत किया।

मानवीय राष्ट्रीय श्रोतोंकी संस्थान अध्यक्ष के परिवारजनों
के समिन्द्र आग्रह पर दिनांक 22 अक्टूबर, 2009 को संस्थान
परिसर में मुनिश्री धिनष्कुमार जी 'अलोक' का सुआगमन हुआ
कार्यक्रम का प्रचुरब उद्देश्य विद्यार्थी, शिक्षकों व अधिकारियों
को अध्यात्म, चरित्र-निर्भाव, अधिकाव विकास का समाज व
राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्वों से सुनिश्ची हारा
बोध प्राप्त करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ लोकप्रिय महिला
मंडल की स्वर्णसेविकाओं हारा भंगलाचरण कर किया गया।
संस्थान के निदेशक प्रो. शशपाल दहिया ने मुनिश्री जा
मावसीना अभिनन्दन किया और विश्वास अवकाश किया कि
उनका जागदिश्वन् व आदीवाचन आगे भी संस्थान को बेस्ती
मिलता रहेगा।

अधिकाव विकास विषय पर व्याख्यान प्रस्तुति में मुनिश्री ने
शारीरिक व बौद्धिक विकास के साथ-साथ ऐतिहासिक मूल्यों की
पुनर्स्थापना व मनुष्य के चरित्र विकास पर ध्युरोध वाल दिया।
उपस्थित शिक्षकों से नवक लोगे हुए उन्होंने जरों रक्त और
सरकार हारा शिक्षक समुदाय के लिये धोखित जाए बोलनमाले।
पर रुक्षी अवकाश की बड़ी दूसरी और उनको "शिक्षकों
के दायित्व व उनकी विद्यार्थी निर्भाव" में भट्टी भूमिका" का
भी बोध कराया। उन्होंने कहा कि "जितना आप लोगे हैं
उसी अनुपात में व फटी उससे भी अधिक आपको देना
है॥" देने से उनका अभिप्राय: दाता-दाताओं को शिक्षित
व प्रशिक्षित करने के साथ राष्ट्र के चरित्र-निर्भाव में
सुवा धीरों को तेजार करने से था। मुनिश्री के वक्तव्य
का विद्यार्थीयों में हर्ष उत्तर से स्वागत किया।

मुनिश्री ने संलोच प्रकट किया कि अभियांश्चिकी संस्थान
में 'प्रिमार्थियों' को अभियांश्चिकी व प्रौद्योगिकी शिक्षा
के अतिरिक्त ऐतिह शिक्षा दिलाने का क्या रक्त
देखा सा प्रश्न स किया जा रहा है।

अन्त में 'उन्होंने' सभी श्रेत्रजों को यह शपथ दिलाई
की बैठ "न कभी आम-हृषा करेंगे" और तो
यूण-हृषा के 'आगीदर बनेंगे' दात्र-दात्राज्ञों, शिक्षकणों
व अन्य सभी ने रवै द्वेष द्वेष मुनिश्री के समक्ष
इस घटन को पूरा करने का असेसा दिलाया।

प्रौ० श्री गोपाल भोदानी ने मुनिश्री का ~~उत्तम~~ उत्तम अवत
किया और राक्षभर में उनके हारा चलाये जा रहे
जन-प्रगरण पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के आयोजन में संस्थान की सूननालक फला सीमित
के समन्वयक प्रौ० कमल चन्द्र जैन, विद्यार्थी प्रभारी विजय कुमार
अधिष्ठाता प्रौ० रजिन्द्र प्रसाद यादव रवै जेच संचालक
मुक्ति साक्षी गोपल का स्वाहनीय घोगदान रहा।

प्रतिबेदक
(अशोक कुमार अश्वाल,

→ आचार्य मुनिश्री विनय कुमार जी